PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 3, ISSUE 2

विष्णु प्रभाकर के नाटकों में चेतना की अभिव्यक्ति

प्रा. दादासाहेब नारायण डांगे
असिस्टंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज, राहाता
अहमदनगर महाराष्ट्र भारत

विष्णु प्रभाकर मुलत: मानवतावादी लेखक है। उनके नाटकों का मुख्य आधार मानवता ही रहा है। उनके समस्त नाट्य साहित्य में चेतना की अभिव्यक्ति है। वस्तुत: जीवन का कोई भी क्षेत्र विष्णु जी की नाटकीय प्रतिभा से अछूता नहीं रहा हैं, चाहे वह पक्ष वैयक्तिक हो, सामाजिक हो, राजनीतिक हो या नारी से संबंधित अथवा मनोवैज्ञानिक। उन्होंने उन सभी समस्याओं का अपने नाटकों के माध्यम से समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिनसे आज का व्यक्ति निरंतर जूझ रहा है। शोषण, भष्टाचार, स्वार्थता, निर्धनता, बेरोजगारी, मूल्यहीनता जैसी विभिन्न समस्याओं को विष्णु जी ने अपने नाटकों का विषय बनाया हैं और इन समस्याओं से जुझते पात्रों के द्वारा चेतना को विभिन्न रुपों में अभिव्यक्ति दी है। उनके नाटकों के कथ्य विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन सभी नाटकों में चेतना विद्यमान है। निश्चित रुप से विष्णु जी के ये नाटक वर्तमान भारतीय समाज की विसंगतियों की ओर ध्यान आकृष्ट करने में और उनके उपचार ढूँढने के लिए प्रेरित करने में अत्यंत सफल हुए हैं। विष्णु जी के नाटकों में अभिव्यक्त चेतना को हम निम्न प्रकार से विश्लेषित कर सकते है।

१) सामाजिक चेतना :—

विष्णु जी मुख्यत: सामाजिक चेतना से युक्त लेखक है। उनका समस्त साहित्य सामाजिक चेतना से अनुप्राणित हैं। उनके सभी नाटकों में कहीं न कहीं हमें सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है। उनके नाटकों के पात्र अन्याय तथा शोषण के विरुध्द विद्रोह करते दिखायी देते हैं। वे सभी पात्र अपने पर या समाज के किसी भी घटक पर होनेवाले अन्याय के विरुध्द अपनी विद्रोही चेतना को प्रकट करते हैं। 'गांधार की भिक्षुणी' नाटक में आनंदी हूण युग की वेदना और बलिदान की, पीडित जनता की, जनता के अद्‌भूत विद्रोह की प्रतीक है। वह हुणों के अत्याचारों के विरुध्द जनता में चेतना उत्पन्न करने के लिए स्फूर्तिला भाषण देती है— ''मालविको? हमें बहुत खुशी है कि आप लोग अपने देश को प्यार करते हैं।....यहीं पर उत्पन्न हुआ वह महावीर जिसने शकों का बीजशेष करके शाकारि अपाधि पाई।....आज फिर आपके सामने वही स्थिति पैदा हो गई है जो छ: सौ वर्ष पूर्व मालव—वीर के सामने पैदा हो गई थी। उस समय इस प्रदेश को शकों ने अपने पैरों से रौंद डाला था, आज हूण इसे रौंद रहें हैं।''१ इसप्रकार वह सामान्य जनता को प्रेरित करने का प्रयास करती है।

इसीप्रकार 'होरी' नाटक का गोबर प्रगति"ील चेतना से युक्त युवक है। वह अन्याय के विरुध्द संघर्ष करता है। होरी नाटक में झुनिया के मामले में पंचायत द्‌वारा होरी पर डाँड लागाए जाने की खबर पाकर वह दातादीन से कहता है— ''उन पंचो पर दावा करना हैं जिन्होंने डाँड के बहाने मेरे डेढ़ सौ रुपए हजम किए हैं। मैं देखू कौन मेरा हुक्का—पानी बन्द करता है और कौन बिरादरी मुझे जात बाहर करती है।''2 इसीप्रकार गाँववालों का शोषण करनेवाले महाजनों की पोल खोलते हुए गोबर अपनी विद्रोही प्रतिक्रिया इस रुप में प्रकट करता है—''कैसी चाकरी और किसकी चाकरी? यहाँ कोई किसी का चाकर नहीं। सभी बराबर हैं। अच्छी दिल्लगी है। किसी को सौ रुपये उधार दे दिए और सूद में उससे जिन्दगी भर काम लेते रहें। मूल ज्यों का त्यों। यह महाजनी नहीं, खून चूसना है।''3 इसप्रकार गोबर के उक्त संवाद शोषण के विरुध्द किए गए विद्रोह को अभिव्यक्त करते हैं।

इसी के साथ ही गरीब किसानों के मन में शोषक वर्ग के लिए जो घृणा है वह होरी के उक्त संवाद से व्यक्त हुई है। वह कहता है–''मोटे वह होते हैं, जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेईमानी है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है।''4 यहाँ होरी के व्यंग्योक्ति के माध्यम से आर्थिक शोषण के ि"ाकार बने सामान्य व्यक्ति की आर्थिक चेतना को अभिव्यक्त किया गया है।

इसीप्रकार 'सूरदास' नाटक का सूरदास सामाजिक चेतना से अनुप्रणित है। उसपर जब अन्याय होता है तो वह न्याय के लिए शोषक वर्ग के विरुध्द अकेला संघर्ष करता है। उसके उक्त संवाद उसकी चेतना को अभिव्यक्त करते हैं। वह कहता है– ''मेरी चीज है, बाप–दादों की कमाई है; किसी दूसरे का उस पर अख्तियार नहीं है।....अगर जमीन गई तो उसके साथ मेरी जान भी जाएगी। मेरा भी यह प्रण है।''५

इसप्रकार विष्णु जी अपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक चेतना को अभिव्यक्त करतें है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि विष्णु जी एक मानवतावादी लेखक है। सामान्य जनता से उन्हें सहानुभूति है। वस्तुतः नाटकों के पात्रों के द्वारा वे अन्याय तथा शोषन के विरुध्द अपने स्वयं के विचारों को ही प्रकट करते हैं।

2) राजनीतिक चेतना :–

विष्णु जी ने अत्यंत स"ाक्त एवं सफल ऐतिहासिक नाटकों की रचना की हैं। जिनमें राजनीतिक चेतना को उठाया गया है। विष्णु जी ने ऐतिहासिकता एवं पौराणिकता को वर्तमान संदर्भ से जोडकर तत्कालिन राजनीतिक परिवे"ा तथा निरंकु"ा शासन व्यवस्था को यथार्थ रुप में प्रस्तुत किया हैं। विष्णु जी तत्कालिन राजनीतिक परिस्थिति पर खेद प्रकट करते हैं। आज की घृणास्पद राजनीति, भ्रष्टाचार, 'ाड़यंन्त्र, छल–कपट, स्वार्थता, अवसरवादिता जैसी प्रवृत्तियों को उन्होंने अपने नाटकों में उभारने का प्रयास किया हैं। उनके नाटकों के पात्र इन परिस्थितियों से तंग आकर उनके खिलाफ संघर्ष करते हैं। इन नाटकों में अभिव्यक्त राजनीतिक चेतना को हम इसप्रकार वि"लेषित कर सकते है– 'नव प्रभात' नाटक में बन्दी बनाया गया कलिंग का युवराज कुमार अ"ाोक से बडे साहस और

आत्मसम्मान के साथ कहता है– ''कलिंग का राजकुमार कलिंग के अतिरिक्त और किसी सिंहासन के सामने झुकना नहीं जानता।....कलिंग के युवराज के रहते कलिंग का स्वामी कोई नही हो सकता, अ"ोक।....उसकी (कलिंग के राजमुकुट की) ओर दृष्टि उठानेवाले की आँखे निकाल ली जाती है, अ"ोक।''6 युवराज की इस उक्ति में अपने दे"ा को गौरवान्वित तथा बाहरी शक्तियों की अधीनता से स्वतंत्र रखने की अदम्य राजनीतिक इच्छा अभिव्यक्त है। यहाँ राजनीतिक स्वतंत्रता की प्रबल इच्छा मुखरित है।

इसीप्रकार 'गांधार की भिक्षुणी' नाटक में परंपरा से चली आयी दासता का विरोध स्पष्ट झलकता है। आनंन्दी के उक्त कथन से स्वतंत्रता के लिए उत्पन्न राजनीतिक चेतना को उभारा गया है। आनन्दी कहती है–''दासता से बढ़कर और कोई पाप नहीं होता, मैं दास नहीं हो सकती। मैं स्वतंत्र रहना चाहती हूँ।''7 इसीप्रकार 'गांधार की भिक्षुणी' नाटक में मालवा पर मिहिरकुल का जब आक्रमण होता है, तो उसके विरुध्द य"ोवर्मन के नेतृत्व में जो युध्द किया जाता हैं, उसमें राजनीतिक चेतना का चरमोत्कर्ष पाया जाता है। इसमें जनतान्त्रिक शासन व्यवस्था को अक्षुण्ण बनाए रखने की प्रबल इच्छा य"ोवर्मन के उक्त कथन से अभिव्यक्त हुई है। य"ोवर्मन कहता है– ''....मैं परंपरागत राजवं"ा की स्थापना नहीं करुँगा। मैं साधारण नागरिक के रुप में ही आपका नेतृत्व करता रहूँगा। मैं चाहता हूँ कि इस दे"ा के नागरिक सदा अपने शासक चुनते रहें। वं"ा से नहीं, प्रतिभा से जनेन्द्र का वरण हो।''8 इसप्रकार य"ोवर्मन के उक्त संवाद के द्वारा उसकी राजनीतिक चेतना को साथ ही उसकी जन कल्याण की भावना को व्यक्त किया गया है। यहाँ विष्णु जी ने य"ोवर्मन जैसे चरित्रों का निर्माण कर तत्कालिन राजनेताओं की भ्रष्ट एवं स्वार्थी प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है।

इसीप्रकार विष्णु जी 'चंन्द्रहार' नाटक में भी राजनीतिक चेतना को मुखरित करते है। चन्द्रहार नाटक के देवीदीन का तत्कालिन शासकों के लिए किया गया प्र"न स्वतंत्रता के समय की भारतीय जनता के मन में स्वतंत्र भारत के शासकों के संबंध में उठनेवाली शंका को अभिव्यक्त करता है। देवीदीन के उक्त प्र"न में राजनीतिक चेतना का रुप दिखायी देता है। वह कहता है–''साहब सच बताओ, जब तुम सुराज का नाम लेते हो तो

कौन–सा रुप तुम्हारी आँखो के सामने आता है? तुम भी बड़ी–बड़ी तलब लोगे, तुम भी अंग्रेजों की तरह बँगलों में रहोगे, पहाड़ों की हवा खाओगे? इस सुराज से दे"ा का क्या कल्याण होगा?''9 यहाँ अप्रत्यक्ष रुप में देवीदीन अपने शासकों की प्रवृत्ति के विरुध्द विद्रोह करता हुआ दिखायी देता है। इसीप्रकार 'सत्ता के आर–पार' नाटक में बाहुबली के द्वारा राजनीतिक चेतना को मुखरित किया गया है। इस नाटक में सत्ता की लालसा एवं मर्यादाहीनता पर चिन्ता प्रकट करते हुए बाहुबली कहता है– ''धिक्कार है ऐसी सत्ता को, धिक्कार है उसके मोहजाल में फँसनेवाले को क्या मैंने ऐसी रक्तपिपासु मर्यादाहीन सत्ता के लिए युध्द किया?10 बाहुबली के उक्त कथन से उसकी राजनीतिक चेतना एवं सत्ता–पिपासु नेताओं की मर्यादाहीन प्रवृत्ति के प्रति आक्रो"ा व्यक्त हुआ है। इसप्रकार हम कह सकते है कि विष्णु जी के नाटकों मे राजनीतिक चेतना प्रखर रुप में विद्यमान है। उनके नाटकों के पात्र राजनीतिक चेतना से अनुप्राणित होकर अन्याय एवं शोषन के विरुध्द संघर्ष करते हुए अपनी चेतना को प्रकट करते हैं।

३) राष्ट्रीय चेतना :–

विष्णु प्रभाकर जी के नाटकों में राष्ट्रीय चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति हुई हैं। विष्णु जी के मन में राष्ट्र के प्रति अपार श्रद्धा दिखायी देती है। उनके नाटकों में देशप्रेम तथा राष्ट्रप्रेम की भावना निहित है। वे अपने नाटकों में विभिन्न पात्रों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना की सशक्त एवं सफल अभिव्यक्ति करते है। कलिंग का युवराज कुमार यद्यपि संघमित्रा से स्नेह करता है तो भी वह देशप्रेम को उससे अधिक महत्व देता है। वह संघमित्रा से कहता है–''मेरी मृत्यु ही मेरा कल्याण है। कलिंग के महानाश की वेला में जब उसकी असंख्य युवतियों का सुहाग सिंदूर रक्त में घुल गया हो, तो मैं तुम्हारी माँग में सिन्दूर नहीं भर सकता। आज मेरी आँखें तुम्हारा रुप देखने में अशक्त है। आज मेरे कान तुम्हारी प्रणय–रागिनी सुनने के अयोग्य है।''११ युवराज के उक्त कथन से वैयक्तिक प्रेम से अधिक राष्ट्रप्रेम की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। जिसमें राष्ट्रीय चेतना विद्यमान है। इसीप्रकार 'गांधार की भिक्षुणी' का

यशोवर्मन राष्ट्रीय चेतना का जीता जागता प्रतीक है। वह हुणों के अत्याचारों के विरुध्द जनता में चेतना उत्पन्न करता है। उसका उक्त कथन उसकी राष्ट्रीय चेतना को प्रकट करता है। वह कहता है— ''कभी—कभी मुझे ऐसा लगता है कि मैं भी आनन्दी के साथ घूम—घूमकर जनता के साथ एकाकार हो जाऊँ।....हम सब एक साथ मिलकर हूणों की शक्ति का सामना करें और उन जुल्मों का बदला लें जो उन्होंने तुम पर ढाए हैं।....मुझे मालवा की पीड़ित जनता में नई आशाएँ जगानी हैं,.....।''१२ इसीप्रकार 'टूटते परिवेश' में दीप्ति की इस उक्ति के द्वारा राष्ट्रीय भावना के ऱ्हास पर गहरी चिंता व्यक्त की गयी है। वह कहती है— ''...देश है कहाँ? देश के भीतर एक और देश बनाए बैठे है हम। भीतर के देश का नाम है स्वार्थ, जो प्रान्त, प्रदेश, धर्म और जाति—इन नाना रुपों से प्रकट होता रहता है।''१३

'कुहासा और किरण' नाटक में अमुल्य नयी पीढ़ी की राष्ट्रीय चेतना को स्वर देता हुआ कहता है— ''....हमारे लिए देश सबसे ऊपर है। देश की स्वतंत्रता हमने प्राणों की बलि देकर पाई थी, उसे अब कलंकित न होने देंगे।''१४ इसीप्रकार 'सत्ता के आर—पार' नाटक में बाहुबली का यह कथन राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत है। वह कहता है— ''अब कोई तर्क मुझे मेरे पथ से विचलित नहीं कर सकता। भगवान आदिनाथ ने जो राज्य मुझे दिया है उसकी रक्षा अपने शरीर में रक्त की अन्तिम बूँद रहने तक करुँगा।''१५ इसीप्रकार 'केरल का क्रांतिकारी' इस नाटक में विष्णु जी ने राष्ट्रीय जागरण को प्रखरता से व्यक्त किया है। अमुकुट्टी लोगों का मनोबल बढ़ाते हुए कहती है—''हम अपनी मातृभूमि को गुलाम नहीं होने देंगे। हम प्राण दे देंगे। पर गुलामी का पट्टा गले में नहीं डालेंगे।''१६ इसी नाटक में नायक वेलुत्तंपी के इस उद्गार में हमें उसकी देश के लिए अपने आप को कुर्बान करने की चेतना प्रखर रुप से दिखायी देती है। वह कह उठता है— ''बिना रक्त दान के स्वतंत्रता का स्वर्ण कमल नहीं खिल सकता।....मुझे रक्त दान करना ही होगा।....मेरे वतन की लाल

मिट्टी को लाल रक्त की जरुरत है। मैं उसकी जरुरत पूरी करुँगा।''१७ यहाँ वेलुत्तंपी में राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना निहित है।

निष्कर्ष रुप में हम कह सकते हैं कि विष्णु प्रभाकर के नाटकों में राष्ट्रीयता का स्वर प्रखरता से गूँज उठा हैं। राष्ट्र के प्रति उनमें गहरी संवेदना भरी हुई है और उनकी यही संवेदना उनके नाटकों में विभीन्न पात्रों के माध्यम से व्यक्त हुई है।

४) सांस्कृतिक चेतना :—

विष्णु जी को अपनी संस्कृति से अत्यंत लगाव है। पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रभाव को उन्होंने हमेशा अपनी लेखनी का विषय बनाया है। वे भारतीय संस्कृति पर हावी पाश्चात्य संस्कृति का अपने नाटकों के माध्यम से विरोध करते है जिससे हमारी नयी पीढ़ी उच्छृंखल होती जा रही हैं। मूल्यों में आयी गिरावट विष्णु जी अपनी आँखों से देख रहें थे, जिससे उन्हें बेहद व्यथित किया था। अपनी संस्कृति के होते ऱ्हास को देखकर विष्णु जी ने अपनी सांस्कृतिक चेतना को नाटकों के द्वारा अभिव्यक्त किया हैं। उनके अधिकतर नाटकों में यह सांस्कृतिक चेतना प्रभावी रुप से प्रकट हुई हैं। विष्णु जी के 'नव प्रभात' नाटक में रेवा के उक्त संवाद प्रेम की पवित्रता को उजागर करने में सफल हैं, जो भारतीय संस्कृति का द्योतक है। इस नाटक में कलिंग के युवराज कुमार के प्रति अशोक की बहन संघमित्रा के प्रेम की तीव्रता को समझकर रेवा कहती है—''प्रेम भी कितनी अद्भुत कितनी पवित्र भावना है। सब लोग प्रेम ही क्यों नहीं करने लगते।''१८ यहाँ प्रेम की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है, क्योंकि प्रेम भारतीय संस्कृति का उच्चतर सोपान है। इसीप्रकार 'गांधार की भिक्षुणी' में यशोवर्मन का उक्त कथन भारत की सामायिक संस्कृति को बनाए रखने का संकल्प करता है। वह कहता है— ''हूणों की राजनीतिक शक्ति तोड़कर ही उन्हें समाप्त नहीं किया जा सकता। उन्हें अपने में समा लेना ही उन्हें समाप्त करने की सही राह है।''१९ यशोवर्मन के उक्त संवाद के द्वारा विष्णु जी ने सांस्कृतिक समन्वय की चेष्टा की है।

इसीप्रकार 'चन्द्रहार' नाटक की जालपा के मन में अलंकारों के प्रति जो मोह दिखाया गया है वह भारतीय संस्कृति की जीर्ण प्रवृत्तियों में से एक है जिसे उतार फेंकने का संदेश जालपा और रमानाथ के जीवन की त्रासदियों के द्वारा दिया गया हैं। 'चन्द्रहार' नाटक में आभूषणों के लालच के कारण होनेवाले दुष्परिणामों को दिखाकर सांस्कृतिक पतन को प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार 'होरी' नाटक में विष्णु जी ने भारतीय संस्कृति में गाय का जो महत्व है उसका प्रतिपादन किया है। एक किसान के मन में गाय पालने की जो लालसा होती है वह होरी के उक्त कथन से व्यक्त हुई है। होरी भोला से कहता है— ''धन्य है तुम्हारा जीवन कि गऊओं की इतनी सेवा करते हो। हमें तो गाय का गोबर भी मयस्सर नहीं। गिरस्थ के घर में एक गाय भी न हो तो कितनी लज्जा की बात है।''२० यहाँ होरी के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त किया गया है। इसीप्रकार एक और नाटक 'युगे—युगे क्रांति में यह दिखाया गया है कि पीढ़ी दर पीढ़ी विवाह संबंधी मूल्यों में परिवर्तन आ रहा हैं। आज की पीढ़ी बरसों से चली आयी विवाह की संकल्पना को भी ठूकरा रही हैं। इसपर विष्णु जी खेद प्रकट करते है। वे इस नाटक के पात्रों द्वारा यह स्पष्ट करते है कि यह संस्था हर युग में परिवर्तित होती है, उसमें दखल देना उचित नही है। इस नाटक के उक्त संवाद अपनी संस्कृति को दर्शाते है। प्रदिप अपनी बेटी अन्विता को लेकर अपनी पत्नि जैनेट से कहता है— ''यह उसका अपना मामला है। हमें दखल देने का कोई अधिकर नहीं है।''२१ प्रदिप का बेटा अनिरुध्द अपने पिता से कहता है— ''आपको प्रसन्न होना चाहिए की आपके बच्चों ने आपको इस जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया।''२२ इसीप्रकार प्रदीप की बेटी अन्विता के उक्त कथन से नयी पीढ़ी के दृष्टिकोण को देखा जा सकता है। अन्विता कहती है— ''लेकिन डैडी, दुनिया बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है। हम अगर समय के साथ नही चलेंगे तो पिछड़ जाएँगे। बिता हुआ हर क्षण मिट जाता है और जो उसके पीछे भागते रहते हैं वे भी फोस्सिल बनकर रह जाते है।''२३ उपर्युक्त संवादों के माध्यम से विष्णु जी ने पीढ़ीगत संघर्ष

को दिखाकर अपने देश के सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रस्तुत किया है। जिसमें कहीं न कहीं सांस्कृतिक चेतना मुखर है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि विष्णु जी के नाटकों में चेतना विविध रुपों में विद्यमान हैं। जिसके द्वारा वे समाज की खोकली मान्यताओं, विद्रुपताओं, विषमताओं, शोषण, भ्रष्टाचार तथा अन्याय पर प्रहार करते हैं। उनके नाटकों में अभिव्यक्त चेतना के विभिन्न रुप इसप्रकार हैं —

- शोषण, अन्याय, निर्धनता, बेकारी जैसी समस्याओं के विरुध्द सामाजिक चेतना को मुखर किया गया है।
- भ्रष्टाचार, स्वार्थता, अवसरवादिता, अत्याचार, निरंकुशता, सत्ता—पिपासा, अपराध, दमननीति जैसी प्रवृत्तियों के विरुध्द राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त किया गया है।
- त्याग, बलिदान, राष्ट्रप्रेम, देश का गौरव, प्रेम, करुणा जैसे उदात्त भावों की व्यंजना तथा राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों के विरुध्द राष्ट्रीय चेतना को उजागर किया है।
- सांस्कृतिक गौरव की अभिव्यंजना हुई है। साथ ही बदलते जीवन मूल्यों को भी अभिव्यक्त किया गया हैं। संस्कृति के लिए हानिकारक तत्वों के विरुध्द सांस्कृतिक चेतना को मुखरित किया गया है।

इसप्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि विष्णु जी का नाट्य साहित्य चेतना से युक्त हैं। उसमें सर्वत्र चेतना प्रवाहित हैं।

आधार ग्रंथ :—

१) डॉ. वन्दना मिश्रा, विष्णु प्रभाकर के नाटकों में मानवीय संवेदना
२) डॉ. सुभाष रस्तोगी, विष्णु प्रभाकर का साहित्य
३) डॉ. सुधा मल्होत्रा, विष्णु प्रभाकर व्यक्तित्व और कृतित्व
४) डॉ. दिनेश चन्द्र वर्मा, समकालीन हिंदी नाटक एवं नाटककार
५) डॉ. सूमा रोडनवर, विष्णु प्रभाकर के कथा साहित्य में सामाजिकता
६) डॉ. बी.एस.विवेकानन्द पिल्लै, विष्णु प्रभाकर के नाट्य साहित्य में सामाजिक चेतना
७) विष्णु प्रभाकर, विष्णु प्रभाकर: सम्पूर्ण नाटक
८) डॉ. हरदेव बाहरी— हिंदी शब्दकोश, राजपाल प्रकाशन, नई दिल्ली.

संदर्भ सूची :—

१. विष्णु प्रभाकर, विष्णु प्रभाकर: सम्पूर्ण नाटक, भाग—५, पृष्ठ ९०—९१
२. वही, वही, भाग—५, पृष्ठ ३८५
३. वही, वही, भाग—५, पृष्ठ ३८८
४. वही, वही, भाग—५, पृष्ठ ४१८.
५. विष्णु प्रभाकर, सूरदास, पृष्ठ ४७—४८
६. विष्णु प्रभाकर, विष्णु प्रभाकर: सम्पूर्ण नाटक, भाग—५, पृष्ठ ३१
७. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ ११३
८. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ १४०
९. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—६, पृष्ठ २४९
१०. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—४, पृष्ठ ४३२
११. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ ६४
१२. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ १०१
१३. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—२, पृष्ठ ४३
१४. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—६, पृष्ठ १८८

१५. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—४, पृष्ठ ४१२

१६. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ १७१

१७. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ २००

१८. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ २५

१९. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ १३८

२०. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—५, पृष्ठ ३४४—३४५

२१. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—३, पृष्ठ १६०

२२. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—३, पृष्ठ १६०

२३. विष्णु प्रभाकर, वही, भाग—३, पृष्ठ १६३